आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में लोक विश्वास

Public belief in the literature of Acharya Hazari Prasad Dwivedi

Dr. Rekha Shukla

Kripalu Mahila Mahavidyalaya Kunda Pratapgarh

शोध सार- मनुष्य का व्यवहारिक जीवन जिन मूलभूत तत्वों पर आधारित रहता है वे है उसके विचार, भाव, विश्वास तथा उनकी मान्यताएँ । नागर जन समुदाय के जीवन में विवेक या विचारों का प्राधान्य होता है जबकि लोक स्तरीय जन समुदाय में विवेक - बुद्धि के स्थान पर भावों एवं विश्वासों का । विवेकशील प्राणी इन पारस्परिक मान्यताओं का निरीक्षण-विश्लेषण करता रहता है। जिसके परिणामस्वरूप उन मान्यताओं में निरन्तर परिष्कार की चेतना विद्यमान होती है। इसके विपरीत जन सामान्य या लोक के लिए परम्परागत बातें एक सुदृढ़ एवं पवित्र आस्था का तत्व बन जाती है। वह उन परम्पराओं में किंचित मात्र भी- परिवर्तन तथा परिष्कार नहीं करना चाहता। वह उन्हें ज्यों का त्यों अपना लेना ही अपना कर्तव्य मानता है। इसके पीछे दो कारण होता है – (1) उसकी आस्था शील प्रकृति (2) परिवर्तन के कारण भय की आशंका । इस प्रकार ये विश्वास एवं मान्यताएँ लोक की परम्परा से जुड़कर हमेशा के लिए अपनी सत्यता स्थापित कर लेती हैं और आगे आने वाली पीढ़ी उसे परम्परा रूप में स्वीकार करती चली जाती है। इस प्रकार लोक प्रचलित इन विश्वासों का वैज्ञानिकता या तर्क से कोई सम्बन्ध नहीं है। ये लोक जीवन के काल्पनिक अनुभव पर आधारित है। इन लोक विश्वासों को दो वर्गों में रखा जा सकता है ।

(1) अंधविश्वास (2) लोक विश्वास

लोक विश्वास एवं अंधविश्वास में अन्तर - लोक विश्वास के अन्तर्गत हम ऐसे विश्वासों की गणना कर सकते हैं जिन्हें कोरे अन्धविश्वासों के रूप में नहीं स्वीकारा जा सकता है और अन्धविश्वास के समान सामाजिक महत्त्व के दृष्टिकोण से ही उन्हें निरर्थक नहीं कहा जा सकता। ऐसे लोक विश्वासों का एक नैतिक महत्व होता है। फिर भी वे पूर्णतया आस्थाएवं विश्वास पर ही आधारित है। जैसे- आशीर्वाद, शपथ, शाप के प्रभावों में विश्वास ।

अन्धविश्वास का शाब्दिक अर्थ है- अन्धा विश्वास । जब कोई व्यक्ति किसी भी चमत्कार अथवा होनी अनहोनी बात पर बिना कुछ सोचे- समझे विश्वास करने लगता तो उस विश्वास को हम अन्ध विश्वास कहते हैं। "अन्ध विश्वास से अभिप्राय ऐसे सिद्धान्त अथवा प्रथाएं हैं, जिन पर सावधानीपूर्वक चिन्तन करने पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता तथा उचित नहीं बताया जा सकता।"1 अन्ध विश्वास के अन्तर्गत हम टोने-टोटके] भूत-प्रेत]डायन-चुड़ैल] झाड़-फूंक या जंत्र -मंत्र उपचारों को ले सकते हैं।

प्रस्तावना - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कृतियों में लोक विश्वास और अन्ध विश्वास के बहुत प्रसंग आये है। अध्ययन की दृष्टि से यहाँ लोक विश्वास शीर्षक का निर्धारण किया गया है जो विश्वास एवं अंधविश्वास से सम्बन्धित है।

मध्यकालीन धर्म साधना के आधार पर लिखा गया "चारुचन्द्रलेख" उपन्यास में भी उक्त प्रकार के लोक विश्वासों का समावेश किया गया है। आचार्य द्विवेदी ने लोकानुभव को अपनी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। लोक जीवन से उनका गहरा लगाव है। और इसी सन्दर्भ में उनकी समता निराला जी से की गयी है। द्विवेदी जी ने हिन्दी की मूल प्राण धारा को इस धरती के संस्कारों में खोजा है,साहित्य को उन्होंने लोकजीवन से, उनकी अनगढ़ शैली से जोड़ा है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने साहित्य में केवल अभिजात वर्ग का ही नहीं सामान्य लोकजीवन में प्रचलित विश्वासों का भी चित्रण किया है। "बाण भट्ट की आत्मकथा" में "चंडी मन्दिर के पुजारी के कार्यकलाप " 2 विरतिव्रज के

साधक बनने के प्रसंग" 3 बाणभट्ट का सम्मोहन का शिकार होकर बलि होते-होते बचना"4 आदि तत्कालीन सामान्य जीवन तथा धार्मिक विश्वासों और साधनाओ का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

आचार्य द्विवेदी जी ने सामान्य वर्ग में प्रचलित टोने-टोटके भूत प्रेत, झांड फूँक, जंत्र-मंत्र, दुवा- ताबीज आदि का वर्णन अपने उपन्यास 'अनामदास का पोथा' में किया है। तत्कालीन समाज में लोगों में धर्म के प्रति अटूट आस्था थी वे सिद्धो आदि पर भी विश्वास करते थे। द्विवेदी जी ने इन शब्दों में धार्मिक स्थिति का संकेत किया है " जनपद में एक महात्मा के आने का समाचार मिला था। प्रजा को उनकी चमत्कारी शक्तियों पर भी बड़ी आस्था है। वे जब प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं तो लोगों के सभी प्रकार के कष्ट दूर हो जाते है।"5 उस समय भूत-प्रेत तथा ओझा लोगों के उपचार पर भी जन सामान्य का विश्वास था। जड़ी-बूटियों का भी प्रयोग करते थे। मंत्र जप करते थे और टोना,टोटकों का भी प्रयोग करते थे। इसका संकेत इन वाक्यों में मिलता है " वैद्यों और ओझा लोगों से उपचार पूँछते, जड़ी बूटियाँ ले आते, मंत्र जप करते और अनेक प्रकार के टोटकों का भी प्रयोग करते ।"6 समाज में उस समय शाक्त साधना का भी खूब प्रचलन था। डॉ0 अजित नारायण सिंह के अनुसार - "वस्तुतः किसी भी प्रकार की उपासना मूलतः शक्ति की ही उपासना होती थी ।" 7 तन्त्रों में शक्ति को स्त्री रूप में ही देखा जाता तथा पूजा जाता है, जिसे 'त्रिपुर भैरवी' के साथ- साथ 'कुल' भी कहा जाता है जबकि शिव 'अकुल' है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने साहित्य में तीर्थस्थान का उल्लेख कई स्थलों पर किया है । 'पुनर्नवा' में आर्य देवरात मृणालमंजरी के विवाह के पश्चात आश्रम (हलद्वीप) को छोड़ दिया और वे तीर्थ यात्रा पर निकल पडे । उन्होंने काशी की शीतल धारा में अवगाहन करते हुयें आगे बढ़े, त्रिवेणी तट के कल्पवास में विरले यमुना की शीतल धारा में स्नान करते मथुरा पहुँचे । "8 ''अनामदास का पोथा'' में द्विवेदी जी ने एकान्त में 'तप' करने को मूल्यहीन बताया है। महर्षि औषस्ति रैक्व को समझा रहे है "एकान्त का तप बड़ा नहीं है बेटा, देखों संसार में कितना का कष्ट है, रोग है, शोक है, दरिद्रता है, कुसंस्कार है। लोग दुःख से व्याकुल है। उनमें जाना चाहिये। उनके दुःख का भागी बनकर उनका कष्ट दूर करने का प्रयत्न करो । यही वास्तविक 'तप' है।"9 सामान्य लोकजीवन में शिव की पूजा भी पति और पुत्र कामना के लिए की जाती थी।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में तीर्थाटन, तीर्थस्थान, पूजा. यज्ञ, तप कथा श्रवण सभी धार्मिक लोक विश्वास का वर्णन मिलता है। अनामदास का पोथा में महषि औषस्ति रैक्व को समझा रहे है कि " तूने बहुत तपस्या की हैं पर तपस्या का एक बहुत आवश्यक अंग है सत्संग उसी की कमी तुझमें जान पड़ती है।" 10 'चारूचन्द्रलेख' में आये उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि उस काल की संस्कृति मानव जीवन को भौतिक सुख संग्रह की ओर अत्यधिक अग्रसर हो उठी थी और आध्यात्मिकता की उपेक्षा के कारण जो असन्तुलन आने लगा उसने समस्त भारतीय जनजीवन को झकझोर दिया था। अनेक धर्मों के दुराग्रह उनकी कट्टरता से उत्पन्न कलह और विविध प्रकार के अन्धविश्वासों के चमत्कारी वर्णन द्विवेदी जी के इस उपन्यास में भी मिलते हैं। इसका आधार यह है कि द्विवेदी जी जीवन को जीने योग्य बनाने वाले उन सभी तथ्यों का उल्लेख करना चाहते है जिनकी मानव जीवन को आवश्यकता है। 'चारूचन्द्रलेख' के अन्तिम पृष्ठ पर अघोरनाथ का जो जीवन परिचय द्विवेदी जी ने दिया है उसमें उनकी स्वयं की मान्यताएं है।

'पुनर्नवा' में गणिका मंजुला जो कि उस समय और आज के समाज में भी पतित मानी जाती है 'व्रत एवं उपवास' के सन्दर्भ में सिर्फ इतना ही उल्लेख मिलता है कि देवरात के प्रभाव से मंजुला में अनेक परिवर्तन हुए " वह अपना अधिकांश समय पूजा -पाठ में बिताती है, व्रत उपवासों का विधिवत उद्यापन करती है।" 11 'बाण भट्ट की आत्मकथा' में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वरदान' अथवा 'आशीर्वाद' सम्बन्धी लोकविश्वास का उल्लेख कई स्थलो पर किया है । 'पुनर्नवा' में श्यामरूप को जब शिव मन्दिर की वृद्धा माता मन्दिर में छिपा एक अस्त्र देती है और समझाती हुयी कहती है कि " वह शिव का ही वरदान है इसलिए उससे कोई अनुचित कर्म नहीं करना ।"12 श्याम रूप तलवार लेकर देखता है और माता के चरणों में सिर रखकर बोला ^^इसे दीन-दुःखियों के सेवा के अलावा कहीं भी गलत कार्यों में प्रयोग नहीं करूंगा। यह शिव का वरदान है तुम्हारा आशीर्वाद है। मेरा विश्वास है कि इसे चलाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। शत्रु इसको देखकर

ही निस्तेज हो जायेंगे ।"13 'अनामदास का पोथा' में आचार्य औदुम्बरायण जाबाला के स्वस्थता के लिए ऋषि रैक्व के पास आशीर्वाद लेने जाते हैं और आकर जाबाला से बताते हैं तो जाबाला आचार्य को सम्बोधित करते हुयी कहती हैं "तात आप व्यर्थ में परेसान हो रहे हैं मैं तो आपके आशीर्वाद से ठीक हो रही है।"14 स्वप्न के सम्बन्ध में अनेक लोक विश्वास पाये जाते हैं। लोगों की ऐसी धारणा है कि स्वप्न में जो वस्तु देखी जाती है, उससे शुभ एवं अशुभ का अनुमान लगाया जा सकता हैं। प्रायः ऐसा विश्वास किया जाता है कि ब्रह्म मुहूर्त में देखा गया स्वप्न सच्चा होता हैं। इन स्वप्नों को यथार्थता पर लोगों को अटूट विश्वास है। साहित्य एवं इतिहास से यह सर्वविदित है कि लोकजीवन के मनुष्यों ने बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य स्वप्न के माध्यम से सम्पादित किये हैं। उन्हें सदा ही स्वप्नों से प्रेरणा मिली है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की स्वप्नों में अटूट आस्थी थी। स्वप्न को उन्होंने अपने साहित्य में कई रूपों में स्थान दिया है। 'पुनर्नवा' में मृणालमंजरी की दुःचिन्ताओं को देखकर आर्य देवरात विन्ध्यटवी के एक सिद्ध योगी के स्वप्न में आये देवी के आदेश का वर्णन इस प्रकार करते हैं "उन्हें देवी ने स्वप्न में आदेश दिया है कि मेरे सिंहवाहिनी, महिषमर्दिनी रूप की पूजा का प्रचार करों । "15 द्विवेदी जी के उपन्यासों में अलौकिक घटनाओं का वर्णन मिलता है। पुनर्नवा में सिद्ध बाबा द्वारा चन्द्रा को उसके भविष्य की सारी घटनाओं को अवगत कराना ही अलौकिकता का साक्षात प्रमाण है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि अनेक तंत्र मंत्र से युक्त साधनाएं तत्कालीन समाज में व्यापक रूप से प्रचलित थी। सामान्य जनता में भी धार्मिक विश्वास प्रचलित थे, जिनमें भाग्यवाद, नरक स्वर्ग की कल्पना मुख्य थी। ब्राहमण सम्मोहन आदि क्रियाओं के प्रयोग से लोगों पर विश्वास जगाने का प्रयास करते थे।

निष्कर्ष- लोक विश्वास एवं अंधविश्वासों की अभिव्यक्ति द्विवेदी जी के साहित्य में प्रचुर मात्रा में हुई है। सूक्ष्म अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ये लोक-विश्वास एवं अंधविश्वास विश्वभर के लोकजीवन और साहित्य में व्याप्त है। इनका परिप्रेक्ष सार्वभौम है। दूसरे वे विश्वास भी है जिनका महत्त्व किसी देश विशेष के मनुष्य समाज की संस्कृति व सामाजिकता की विशेषताओं की ओर इंगित करते हैं। लोकजीवन में स्वप्नों के प्रति आस्था,अलौकिक शक्तियों में विश्वास, शाप वरदान, झाड़ फूँक,टोना-टोटका, भूत-प्रेत आदि के सम्बन्ध में विश्वास प्रचलित रहते हैं। व्यापक दृष्टि से इन समभावो को विश्वास ही कहा जायेगा किन्तु इस वैज्ञानिक और बुद्धिवादी युग में ऐसे विश्वासों को अंधविश्वास कहना अधिक उपयुक्त होगा जिसका तर्क सम्मत एवं प्रत्यक्ष विश्लेषण न किया जा सके। जहाँ बुद्धिवादी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण सम्पन्न व्यक्ति इन बातों का प्रायोगिक एवं विवेक सम्मत अध्ययन करना चाहता है वहीं लोकस्तरीय व्यक्ति ऐसे विश्वासों या अन्धविश्वासों के समक्ष प्रश्नचिन्ह लगाने की बात सोच भी नहीं सकता। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के साहित्य में अभिव्यक्त ये अन्धविश्वास भारतीय लोक प्रवृत्ति का परिचय देने के साथ ही साथ विश्व व्यापी लोक की प्रवृत्तियों तथा मानस तत्वों का प्रतीकात्मक सन्देश दे सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

01. विधु शर्मा : 'आठवें दशक की कहानियों में चित्रित बदलते सामाजिक प्रतिमान' शोध प्रवन्ध पृष्ठ सं० = 222

2. बाणभट्ट की आत्मकथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ स० = 45

3. बाणभट्ट की आत्मकथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं० = 79

4. बाणभट्ट की आत्मकथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 83

5- अनामदास का पोथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 69

6-अनामदास का पोथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 67

7- द्विवेदी के उपन्यासों में सांस्कृतिक चेतना (शोध प्रबन्ध) रवि कुमार पृष्ठ सं॰ = 131

8- पुनर्नवा - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 116

9- अनामदास का पोथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 56

10- अनामदास का पोथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 54

11- पुनर्नवा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 18

12- पुनर्नवा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 150

13- पुनर्नवा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 151

14 अमामदास का पोथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 60

15- पुनर्नवा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ सं॰ = 36